# भ्रष्टाचार और अपराध के कारण तथा उनका निवारण कैसे हो?

## संस्तुति एवं सुझाव

## द्वारा


## जस्टिस प्रीतम पाल

**(पूर्व जज पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट)**

## लोकायुक्त, हरियाणा।


**हमारी विरासत**

मुझे यह लिखते हुए गर्व महसूस होता है कि मेरा जन्म उस महान देश की पवित्र धरा पर हुआ, जहां ऋषि मुनियों, तपस्वियों, गुरूओं और साधु–सन्तों ने अपने वैदिक और ईश्वरीय ज्ञान द्वारा उच्च आदर्शों, जीवन मूल्यों और संस्कारों की स्थापना की और भारतीय संस्कृति और वैभव को विश्वपटल पर स्थापित किया। वास्तव में जीवन के इन आदर्शों और मूल्यों के बल पर ही मेरा भारत विश्वगुरू कहलाया। इसी के साथ सामाजिक, आर्थिक और व्यवहारिक श्रेष्ठता एवम् गुणों के कारण ही सोने की चिड़िया के नाम से सुशोभित हुआ। एक समय ऐसा था जब समस्त धरा के लोग, भारत वर्ष में जन्म लेने वाले भारतीयों से चारित्रिक शिक्षा, आधात्मिक शिक्षा लेने यहां आते थे (मनुस्मृति)।

एतत देश प्रसूतस्य, सकाशात् अग्र जन्मनः,
स्वं–स्वं चरित्रं शिक्षेरन्, पृथिव्यां सर्व मरनवाः।। (मनुस्मृति से)

लेकिन आज मुझे बड़े दुःख और चिन्ता के साथ यह कहना और लिखना पड़ रहा है कि मेरी इस भारत भूमि पर समय के साथ–साथ जीवन के मूल्य भी परिवर्तित होने लगे और उससे सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक स्तर गिरने लगा। आज जिन हालातों से राष्ट्र गुजर रहा है वह सब हमारे सामने है। हर रोज कुछ न कुछ ऐसा घट रहा है कि प्रत्येक भारतीय का सिर शर्म से झुक जाता है। जिसके कारण व्यक्तित्व और मानवता दिन प्रतिदिन गिर रही है। कानून और व्यवस्था का

डर भी कम हो रहा है। यह सब एक घोर चिन्ता का विषय है। हम सब देख रहे हैं कि महिलाएं प्रतिदिन हवस का शिकार हो रही है और देश की अधिकतर युवा शक्ति पथ भ्रष्ट हो रही है और वर्तमान में भ्रष्टाचार, घोटाले और 16 दिसम्बर, 2012 दिल्ली के निर्भय–दामिनी, और भ्रूणहत्या जैसे घिनौने अपराध देख कर ऐसा लगता है कि हमारी संस्कृति और संस्कार पतन की ओर जा रहे हैं। इन सभी घोर समस्याओं का कारण जानना और उनका निवारण करना हम सब देशवासियों के लिए आज एक सबसे बड़ी चुनौती है।

## कारण

**भारतीय शिक्षा और संस्कृति का लोप होना**

जैसा कि ऊपर लिखा गया है, हमारी शिक्षा और संस्कृति एवम् जीवन मूल्यों की दुनियां में एक धाक थी। सारा संसार भारतवर्ष को विश्वगुरू मानता था। इस विषय में मुझे लार्ड मैकाले का 2 फरवरी, 1835 में ब्रिटिश संसद में दिये व्याख्यान का एक अंश याद आता है '' I have travelled across the length and breadth of India and I have not seen one person who is a thief and beggar. Such wealth I have seen in the country, such high moral values, people of such caliber; that I do not think we would ever conquer this country, unless we break the very back bone of this nation, which is her spiritual and cultural heritage, and therefore I propose that we replace her old and ancient education system, her culture, for if the Indian think that all that is foreign and English is good and greater than their own, they will loose their self-esteem, their native culture and they will become, what we want them, a truly dominated nation."

अर्थात् भारत के लोगों में गज़ब के नैतिक मूल्य हैं। दर्शन धर्म और संस्कृति इस देश की रीढ़ है। इस रीढ़ को तोड़े बिना भारत पर विजय पाना असम्भव है। भारतीय शिक्षा पद्धति का आधार बहुत ही मजबूत, चरित्राधारित, वैज्ञानिक आधारभूत, परिपक्व, गुणवत्तायुक्त सर्वतोन्मुखी, स्वान्तः एवं परकीय सुख की कामना के साथ–साथ त्यागमयी एवं परोपकारी दृष्टि पर आधारित है, इस लिए भारतीय लोग महान हैं। इनको विचलित करना बहुत ही कठिन है। अतः क्यों न इनकी रीड की हड्डी कहलाने वाली आदर्शमयी शिक्षा पद्धति को पहले खराब कर दिया जाए, ऐसा

होने पर आगे जन्म लेने वाले भारतीय तो स्वतः ही पथ भ्रष्ट हो जाएंगें और हम अपने कार्य/मकसद में सफल हो पाएंगे। इसलिए सबसे पहले भारतीय शिक्षा पद्धति को बदल कर, भारतीयों का आत्मसम्मान तोड़ कर, तभी हम इस देश को सही अर्थों में गुलाम बना सकेंगें।''

**विदेशी सभ्यता, शिक्षा और कानून का बोल बाला**

इसके पश्चात इतिहास इस बात का गवाह है कि विदेशियों को जहां भी जैसे भी अवसर मिलता गया, वे हमारी भारतीय शिक्षा और संस्कृति पर लगातार प्रहार (चोट) करते रहे। इस दिशा में अनेकों कानून बनाये गये, शिक्षा पद्धति में संशोधन किये गये, अंग्रेजी भाषा को भारतीय शिक्षा का माध्यम बनाने के लिए धीरे–धीरे बढ़ावा मिलने लगा। सरकारी काम–काज में भी छोटे स्तर पर काम करने के लिये, भारतीय लोगों को, कलर्क/ बाबू बनाने के लिए, अंग्रेजी भाषा और उसकी संस्कृति को सीरवने के लिए बाध्य होना पड़ा। पब्लिक स्कूलों में शिक्षा का प्रचार–प्रसार सब अंग्रेजी भाषा में ही लागू होने लगा। प्रातः कालीन प्रार्थना या सभाएं स्कूलों में पाश्चात्य सभ्यता (western culture) पर आधारित होने लगी। जिससे विद्यार्थियों की सोच, विचार, दिल और दिमाग अपनी मूल संस्कृति और मानव मूल्यों से दूर होते चले गये। इन सब के फलस्वरूप हमारी सोच, हमारा खान–पान, रहन सहन, पहनावा, रीति रिवाज, बोल चाल, चरित्र, और नैतिक मूल्यों के मापदण्डों में विदेशी सभ्यता का बोल –बाला बढ़ता गया, जिसका परिणाम हमारे सामने है। आज हमारे बच्चे, और युवक–युवतियां इस पाश्चात्य सभ्यता से अछूते नहीं हैं। शराब पीना, नशा करना और न जाने कितने तरह के मादक पदार्थों का प्रयोग करना, नौजवानों के लिए एक आम बात हो गई है। इन नशीले पदार्थों का सीधा असर सबसे पहले हमारी बुद्धि और ज्ञान शक्ति पर पड़ा, जिससे हमारी सोच और प्रवृति तामसी हो गई। जिसके फलस्परूप हम चरित्र–हीनता और अपराधिक भावों के साथ–साथ, भ्रष्टाचार, कदाचार, दुराचार, अनाचार, अत्याचार भरी जिन्दगी की ओर प्रवेश करने लगते हैं और हमारा यह अमूल्य एवं पवित्र जीवन नरक बन जाता है, जिसके कारण हमारा पास पड़ोस, गांव, शहर, समाज और राष्ट्र का सारा

वातावरण दूषित होने लगता है। इन सबका प्रभाव हमारे परस्पर के सम्बन्धों पर स्पष्ट नजर आता है।

**सोच और संस्कारों का पतन।**

आज हम देख रहे हैं माता–पिता और बुजुर्गों के प्रति नौजवान पीढ़ी और बच्चों द्वारा उनका सम्मान आदर और सेवा–भाव घट रहा, वैवाहिक सम्बन्ध जो हमारी सभ्यता और संस्कृति का एक पवित्र बन्धन समझा जाता था वे सम्बन्ध भी दिन प्रतिदिन हमारे समाज में कमजोर पड़ रहे है। जिसके फलस्वरूप आज अदालातों में तालाक और आपसी सम्बन्ध–विच्छेद तथा खर्चे (Maintenance allowance) के मुकदमों की भरमार हो रही है। कानून बनाने वाले कानून तोड़ रहे है। (law makers are becoming law breakers) एक अंग्रेजी अखबार (Daily Post) में 25 जनवरी 1913 को छपी रिपोर्ट के अनुसार भारतवर्ष के वर्तमान में कुल 4835 sitting MPs. और M.L.As हैं। इनमें से 1448 यानि (31%) के विरूद्ध criminal cases pending हैं जबकि 641 के विरूद्ध serious cases (Rape, Robery, Kidnapping, Murder, attempt to murder and Extortion) जैसे cases चल रहे है। इन सबके अलावा भी कितने बड़े–बड़े लाखों, करोड़ों और अरबों के घोटालों में अधिकारीगण और बडे–बडे राजनीतिज्ञ, मंत्री संलिप्त पाये गये हैं। चुनाव में धनबल और बाहुबल का प्रयोग बढ़ रहा है। जिसके कारण ईमानदार और शरीफ लोग राजनीति में आने से पीछे हट रहे हैं "So penalty for not participating in politics is that you end up being governed by your inferior" as rightly said by Plato.

**अभी के दो उदाहरण**

आज वर्तमान में अधिकतर लोगों में यह विश्वास और सोच पनप रही है कि जब तक रिश्वत नहीं दी जाती, तब तक कोई भी जायज काम होने वाला नहीं है। मैने खुद महसूस किया है कि आम आदमी तो क्या बड़े–बड़े पढ़े लिखे लोग भी हमारी लोकायुक्त की संस्था में ऐसी शिकायतें लेकर आये हैं कि उनके बड़े काम तो क्या? छोटे–छोटे काम निचले स्तर पर बिना देरी के होने वाले कार्य भी सालों–साल तक लटकाये होते हैं । मैं यहां पर अभी की कुछ दिन पूर्व घटी घटनाएं उदाहरण के तौर पर दो शिकायतों के बारे में बिना किसी का नाम लिए आपकों बता रहा हूँ ।

एक गांव के 'बी' नाम के आदमी ने अपने घर का प्लाट बेच कर और अपनी पत्नी के गहने गिरवी रख 14 लाख रूपये अपने नजदीकी रिश्तेदार को दिए कि उसके लड़के को विदेश में काम करने के लिए भेजने का प्रबन्ध करें। उस रिश्तेदार का लड़का पहले से ही विदेश में गया हुआ था। रिश्तेदार ने पूरा भरोसा दिया हुआ था लेकिन उसके (रिश्तेदार) ने सारे पैसे पुलिस से मिल कर हड़प लिए। आखिर में न उस (बी) का लड़का विदेश भेजा और न ही उस के पैसे वापिस किये। पुलिस में शिकायत करने पर पहले तो कोई कारवाई नहीं हुई और फिर कई महीने चक्कर काटने के बाद केस दर्ज करके दो ऐसे लोगों का चालान किया जो आगे ऐजैन्ट का काम करते थे। लेकिन जो असली दो मुजरिम थे उनके खिलाफ कोई कार्यवाही न करके, उनको कोर्ट में चालान भेजते समय निर्दोष करार दे दिया। शिकायत आने पर मैने पुलिस अफसरों से जवाब लेकर उनकी चालान फाइल पढ़ी और पाया कि केस की तपसीस/ तहकीकात करने वाले पुलिस अफिसर (Investigation Officer) ने रिश्वत लेकर विदेश में भेजने के नाम पर 14 लाख रूपये हजम करने वाले दोनों मुलजमों को जानबूझ कर छोड़ दिया था। मैंने सारा कुछ देख कर और सुन कर यह observe किया कि मुदई (शिकायतकर्ता) रिश्वत न दे पाया जिसकी वजह से असली (Main accused) दोनों बच गये। लेकिन मैं यहां पर यह भी लिखना चाहता हूं कि जब मैंने नोटिस देकर उस तफसीस करने वाले पुलिस अफसर और जो लड़का विदेश में था जिसके आश्वासन पर 14 लाख रूपये दिये थे दोनों को अपने आफिस में Inquiry/जांच के लिए बुलाया तो रिपोर्ट मिली कि उन दोनों का देहान्त हो चुका है। कहावत सही चरितार्थ हुई कि पापी, दोषी, रिश्वतखोर न्यायाधीश और कानून से धोखा देकर बच सकता है परन्तु सबसे बड़े न्यायकारी प्रमात्मा से नहीं बच सकता।

दूसरी घटना HUDA Deptt. की है। एक B ने शिकायत की जिसमे लिखा था कि दो वर्ष से उसकी बिल्डिंग complete बन चुकी है परन्तु उसको completion certificate नहीं मिला। जिसकी उसने कानून के तहत अपील की, जो मन्जूर हुई और आदेश हुआ कि उसे (मालिक बी) को completion

certificate तुरन्त/शीघ्रातिशीघ्र दिया जाये लेकिन उसे सरकार के आदेश के बावजूद certificate जारी नहीं किया। मालिक B ने करोड़ों रूपया बैंक से उधार लेकर वह बिल्डिंग Resort चलाने के लिए बनाई थी, लाखों रूपया महीने का ब्याज देना पड़ रहा था। इन सब के पीछे भी रिश्वत न देने का ही कारण था। मालिक B पर बैंक कर्जा और उस पर interest देने की वजह से तनावग्रस्त रहता था और उसके कारण से शूगर और हाईपरटैन्शन का मरीज़ बन चुका था। मेरे द्वारा inquiry पूरी होने से पहले उसी के दौरान एक पेशी पर उस मालिक B की पत्नी आई और बताया कि इसी केस की चिन्ता की वजह से उसके पति का देहान्त हो गया। इन सबका लिखने का मेरा एक ही अभिप्राय है कि देखो आज अधिकारी और power में बैठे लोगों की सोच कितनी निर्दयी और घटिया हो चुकी है, वे कितने insensitive हो गये हैं कि जायज और सही काम भी रिश्वत दिये बिना समय पर नहीं होते। यहां दोषियों के नाम कानून को ध्यान में रखते हुए नहीं लिखे गये। ऐसी बुरी घटनाओं का परिणाम क्या होगा, उसके लिए Hon'ble Supreme Court ने हाल ही में महाराष्ट्र State के एक Corruption Act, 1988 के तहत केस की अपील फैसला करते हुये observe किया है "corruption is the mother of all evils that affect governance, economy, institutions and people's will to progress, and any soft approach in dealing with it will result in anarchy.

"Corruption mothers disorder, destroys societal will to progress, , accelerates under served ambitions, kills the conscience, jettisons the glory of the institutions, paralyses the economic health of a country, corrodes the sense of civility and mars the marrows of governance," a Bench comprising of Hon'ble Justice K.S.Radhakrishnan and Hon'ble Dipak Misra observed in a judgment.

"It can be stated with absolute assurance that the tendency to abuse the official position has spread like an epidemic," making people believe that "unless bribe is given, the work may not be done", the Bench lamented.

"To put it differently, giving bribe, whether in cash or in kind, may become the mantra of the people" if the situation was allowed to continue, it noted while rejecting the plea of two government servants of Maharashtra for quashing a corruption case against them on the ground that their trial was going on for more than 26 years….."

**शिक्षकों और शिक्षा के स्तर का पतन**

आज हम सबके सामने है कि आमतौर पर हमारे शिक्षक अपने अधिकारों और मागों को लेकर सड़कों पर उतर रहे हैं। कई बार तो हम टी.वी. चैनलों और अखबारों में शिक्षकों के ऊपर, पुलिस द्वारा लाठियां चलाते हुए देखते हैं। दूसरी ओर हमारे स्कूल और कालेजों के छात्र भी अपनी मांगों और अधिकारों को लेकर उग्र रूप धारण करते देखे जाते है। इन सब घटनाओं के फलस्वरूप हमारा देश वास्तविक आधारभूत चारित्रिक शिक्षा के क्षेत्र में दूसरे देशों से पिछड़ रहा है। इस बारे में मैंने अपने देश के राष्ट्रपति माननीय श्री प्रणब मुखर्जी का आज ही दिनांक 22.3.2013 को सोनीपत हरियाणा में दिया एक बयान (statement) पढ़ा जिसके अनुसार ''यह एक चिन्ता का विषय है कि आज हमारे देश में 659 डिग्री प्रदान करने वाली संस्थायें (Instiutions) और 33023 colleges हैं। लेकिन एक International Survey के मुताबिक हमारी एक भी University दुनिया की 200 Top Universities में से नहीं है। He further said "India which represents about 17 percent of the global population, had filed only 2 percent patent applications in 2011. In all India filed about 42000 patent applications, whereas America and China filed more than 5 lakh applications." उपरोक्त सब हालात यह दर्शाते है। कि हम आज शिक्षा के क्षेत्र में कितना पिछड़ गये हैं। इन सब बातों के इलावा आज शिक्षकों के चरित्र और वि|ार्थियों के प्रति उनकी पढ़ाने की निष्ठा में भी कमी महसूस करते हैं। उसी प्रकार छात्रों में अपने शिक्षकों के प्रति पहले वाला आदर भाव और गुरू शिष्य का पहले जैसा पवित्र सम्बन्ध नहीं पाया जाता। यह हम सब के लिए एक दुर्भाग्यपूर्ण वातावरण बनता जा रहा है और नैतिक मूल्यों (Moral Values) का पतन हो रहा है। वास्तव में ये सब बातें ही हमारे देश और समाज में दुराचार,, अनाचार और कदाचार जैसी भयानक बुराइयों का कारण बन रही हैं। यदि इन

उपरोक्त सब कारणों पर अतिशीघ्र गहन सोच विचार करके लगाम नहीं लगाई गई तो, जैसे ऊपर Supreme Court ने लिखा है, देश और समाज को भयानक परिणाम भुगतने पड़ेंगें।

## निवारण

जैसा कि इस अध्याय के आरम्भ में लिख चुका हूँ हम सभी भारतवासी कितनी महान गौरवशाली और वैभवशाली विरासत के धनी थे, जो आज छिन्न–भिन्न होती नजर आ रही है। लेकिन हमें हतोत्साहित होने की आवश्यकता नहीं, हम उन सब खोई हुई अपनी भारतीय संस्कृति मानव मूल्यों और परम्परा को फिर से प्राप्त कर सकते हैं और समाज, शासन तथा देश में सब ओर फैले हुये भ्रष्टाचार, कदाचार, अनाचार, अत्याचार और अपराधों पर एक दम नकेल डाली जा सकती है, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास, सोच, विचार और 50 वर्षों का अनुभव है, परन्तु इन सबका निवारण करने के लिए निम्नलिखित मूल–मन्त्रों को धारण (Adopt) करके कार्यान्वित करना होगा। इस महायज्ञ में सफल होने के लिये सरकार और समाज दोनों को मिलकर दृढ़ संकल्प के साथ कदम उठाने होंगे फिर दुनिया की कोई ताकत हमें अपनी खोई हुई विरासत (Rich Heritage of culture & High Moral Values of Indian People जैसा लार्ड मैकाले ने 1835 में British Parliament में कहा था) उसको पुनः प्राप्त करने से नहीं रोक सकतीं।

**पहला मन्त्र**

**राजनैतिक इच्छाशक्ति एवम् जनमत्त (Political Will & Public Opinion):-** सबसे आवश्यक और सबसे प्रथम हमारे सरकार में बैठे नेता और सभी राजनैतिक पार्टियां यह तय करें कि लोक–सभा और विधान सभाओं में जो नुमाइंदे चुन कर आने हैं, उनकी पहले योग्यता एवं चारित्रिकता निर्धारित करें। बड़े विडम्बना का विषय है कि आज सरकारी नौकरी में लेने के लिए एक चौकीदार और चपड़ासी की तो योग्यता और character की verification की जाती है, परन्तु जिन लोगों ने लोकतान्त्रिक देश और राज्यों की सरकारें चलानी हैं कानून बनाने हैं उनकी Qualification और character verification की जांच नहीं की जाती। मेरा यह

मानना है कि यदि उच्च पदों पर बैठे नेता चरित्रवान और ईमानदार हों तो वे भ्रष्टतन्त्र और भ्रष्टशासन को भी स्वच्छ शासन Good Governance में बदल सकते हैं। इसके विपरीत यदि सरकार चलाने वाले नेता खुद अयोग्य, भ्रष्ट और चरित्रहीन हैं तो उसका क्या परिणाम होगा, इसका अन्दाजा आप खुद लगा सकते हैं।

सन् 1949 में जब भारतीय संविधान के निर्माता इसको final touch देकर पूर्ण कर रहे थे तो उस समय डॉ0 अम्बेदकर ने और कई कमियां संविधान में महसूस की और उनके लिए कुछ संशोधन (Amendments) के सुझाव देने लगे तो इस पर डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद जो बाद में देश के राष्ट्रपति बने, उन्होने कहा था ''डॉ0 अम्बेदकर जी खाली संविधान की कमियां दूर करने से देश का उद्धार और उत्थान नहीं हो सकता यह सब तो देश की लोकसभा और विधान सभाओं में चुने हुये और कानून बनाने वाले लोगों के नुमाइन्दों पर निर्भर करता है। यदि वे (elected representative) ईमानदार और चरित्रवान हैं तो संविधान में हो रही कमियाँ देश की भलाई में आड़े नहीं आ सकती और यदि वे चुने हुए नुमाइन्दे ही भ्रष्ट और बेईमान हैं तो देश का लिखित संविधान भी लोगों और जनता का भला नहीं कर सकता।'' यह सब लिखने का मेरा एक ही तत्पर्य है कि हम सब राजनैतिक दल मिलकर एक ऐसा तन्त्र (Mechanism) और Public Opinion बनायें कि जिससे भ्रष्ट, बेईमान और चरित्रहीन लोगों को देश की उपरोक्त संस्थाओं में चुनकर, राजसत्ता के कर्णधार बनने से रोका जा सके।

**दूसरा मूल मन्त्र**

**<u>आरम्भिक शिक्षा</u> का उद्देश्य चरित्र निर्माण और नैतिक मूल्यों पर आधारित होः–** महात्मा गांधी ने कहा था शिक्षा वह है जो बच्चे का चहुंमुखी विकास करे (By Education I mean all round development of the child) अर्थात जिससे बच्चों की शारीरिक, मानसिक और अध्यात्मिक/चारित्रिक उन्नति हो । इसी को दूसरे रूप में कह सकते हैं कि जिसको प्राप्त करके बच्चा एक श्रेष्ठ मानव बनकर, श्रेष्ठ समाज एवं महान देश का निर्माण कर सके। मेरे विचार में यही सबसे बड़ा इन भ्रष्ट समस्याओं का समाधान है। हम सब बड़ी–बड़ी घिनौनी शर्मसार भरी घटनाएं, चाहे वह भ्रष्टाचार, रिश्वत, बलात्कार, हत्या, या देश में हो रहे घोटालों की हो, उनको

देख कर पहले यही कहते हैं कि नागरिकों की सोच (Mindset) में बदलाव की जरूरत है और साथ में कानूनों में सख्ती लानी जरूरी है।

हमारी सरकार और नेतागण कानूनों में कुछ संशोधन करके सोचते हैं। कि इन सब अपराधों का हल हो जायेगा। मैं पूछना चाहता हूँ कि क्या ऐसा सिर्फ कानून को सख्त बनाने से देश में फैल रहे दुराचार और भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी में कोई कमी नज़र आई है? आंकड़े बताते हैं इन सब प्रकार के जुर्मों में कमी की अपेक्षा बढ़ोतरी हो रही है। फिर कमीं कहां है। वास्तव में कमी तो हमारे दिल–दिमाग और मन के विचारों में है हमारी सोच (Mindset) और संस्कारों में है। इन सबको बदलने के लिये भी क्या हमने पिछले आज़ादी के 65 वर्षों में कोई कदम उठाये हैं?

आज भी हम देश में कोई बड़ी शर्मनाक घटना होने के बाद यही कहते सुनते आ रहे हैं कि हमारी सोच में बदलाव की जरूरत है। थोड़े दिन अखबार, रेड़ियो, टी.वी. चैनलों पर सरकार के कुछ लोग और नेतागण अपनी–अपनी बातें करके चुप हो जाते हैं। जबकि आज मैं। समझता हूँ कि सोच केवल कहने से बदलने वाली नहीं, न ही इसकी कोई ऐसी चाबी है, कि जिसके लगाने से नवयुवकों और देश के लोगों की सोच (Mindset) में एकदम बदलाव आ जायेगा और सब भ्रष्टाचार और अपराध समाज से समाप्त हो जायेगें।

वास्तव में इन सब उपरोक्त भयानक समस्याओं का हल निकालने के लिए लम्बे स्तर पर (Long term plan) बनाने की अति आवश्यकता है। इसके लिये शिक्षाविदों (Eminent Educationist) की केन्द्र और राज्य स्तर पर कमेटियाँ बनाई जायें जो बड़े सोच–विचार के साथ विद्वानों से विचार विमर्श करके आरम्भिक शिक्षा का विस्तार रूप और ऐसा स्लेबस/पाठयक्रम तैयार करें जिससे बच्चों की मानसिक, बौद्धिक, चरित्रिक व शारीरिक शक्तियों का चहुंमुखी विकास के साथ–साथ उनके विचार, सोच, संस्कार और नैतिक मूल्य स्कूल स्तर की शिक्षा पूरी करने तक, इतने मजबूत (strong) दृढ़ (Firm) हो जाएं कि जब वे उच्च शिक्षा के या जीवन के किसी भी क्षेत्र में जाएं तो देश के एक आदर्श और जिम्मेवार नागरिक बन कर काम

करें। ऐसे उच्च चरित्र के नागरिक ही आने वाले समय में अच्छे माता–पिता, अधिकारी, नेता और कर्मचारी बनकर, समाज, राज्य, व देश हितैषी कर्णधार बनेंगें।

मैं अपने जीवन के अनुभव के आधार पर यहाँ पर यह भी बताना चाहूँगा कि आज भी मेरे सामने ऐसे लोग भी आये हैं कि जिनकी समाज और शासन में अपनी ईमानदारी और उच्च चरित्र की वजह से एक अलग ही शौहरत है । कई ऐसी गम्भीर शिकायतें मेरे सामने पेश हुई, जिनमें दोनों पर्टियों ने रजामन्द होकर कहा कि फलाँ और अमुक आफिसर से जाँच करवा दो और वह दोनों को मंजूर होगा। इस प्रकार के नेक और अच्छी छवि के लोग आज भी गिने चुने हर क्षेत्र में मिलते हैं । गहराई से सोचने और जानने के बाद पता चलता है कि इन सबके पीछे उनके परिवार और अच्छी स्कूली शिक्षा द्वारा दिये गये उच्च संस्कार और जीवन के नैतिक मूल्य आज भी उनके अन्दर विद्यमान हैं।

**तीसरा मूल मन्त्र**

**<u>आदर्श माता–पिता, शिक्षक और समाज</u>**

सबसे पहले माता–पिता की जिम्मेवारी बनती है कि वे अपने बच्चों के जन्मदाता के साथ–साथ उनके श्रेष्ठ जीवन निर्माता भी बनें, बच्चा बड़ा होकर भी स्कूल में शिक्षकों के पास तो छः घंटे के लिए ही रहता है। जबकि बाकी अठारह घंटे माता–पिता, अपने परिवार/आस–पड़ोस के साथ ही रहता है। बच्चों के आरम्भिक संस्कार तो माता–पिता की गोद में ही मिलते हैं। लेकिन आज जो हम देख रहे हैं, अधिकतर बच्चों का बचपन तो बिना माता–पिता की देख रेख के ही निकल जाता है। जिसकी वजह से बच्चों की सोच, आदतें, स्वभाव और संस्कार बिगड़ने लगते हैं। जिनकों बाद में संवारना और बदलना बड़ा मुश्किल हो जाता है। इसलिए यह अति आवश्यक है कि माता–पिता अपने बच्चों के निर्माण के लिए उन पर अपने और कामों की अपेक्षा अधिक ध्यान और समय दें। इसी के साथ यह और भी आवश्यक हो जाता है कि माता–पिता का जीवन बच्चों के लिए आदर्श मानव मूल्य पेश करें।

इसके बाद माता–पिता की गोद से निकल कर जब बच्चा अपने शिक्षकों और गुरूओं की custody (अर्थात स्कूल में) जाये तो वहाँ पर उसको एक शुभ, पवित्र

और चरित्र निर्माण करने वाली शिक्षा का वातावरण मिले। इस सबके लिए आवश्यक है कि सरकार शिक्षा के क्षेत्र में धन लगाने के बजट पर विशेष ध्यान दें। ताकि बच्चों को अच्छी से अच्छी शिक्षा प्रदान करने का एक आदर्श रूप (Ideal Infrastructure) तैयार हो सके, जहाँ पर हमारे स्कूलों में पढ़ाने वाले शिक्षक भी योग्य, चरित्रवान और निष्ठावान हों। मेरा यह मानना है कि शिक्षा और शिक्षक को देश और समाज में सबसे ऊँचा स्थान देना सरकार का पहला काम है। इसके लिये आवश्यक है कि उच्च कोटि के शिक्षक तैयार किये जायें, जिनका कैलिबर High (शिक्षा का स्तर, योग्यता) ऊँचा हो उन्ही लेगों को शि़क्षा के क्षेत्र में चुना जायें । फिर उनकी ट्रेनिंग इतने उच्च स्तर की हो कि शिक्षक बनने के बाद वे वि|ार्थियों और समाज के लिए ''मनुर्भव'' अर्थात् उनका जीवन एक आदर्श मानव मूल्यों का उदाहरण Example पेश कर सकें। इस प्रकार उच्च स्तर के चरित्रवान और निष्ठावान शिक्षकों को सरकार और प्राईवेट संस्थाएं उच्च स्तर के वेतनमान और शिक्षा सम्बन्धित सहुलियतें प्रदान करें। ऐस सब करने के लिए सरकार को बिना देरी कदम उठाने चाहिएं, ताकि आने वाली पीढ़ी को एक आदर्श और उच्च चरित्र निर्माण, और नैतिक मूल्यों की शिक्षा प्रदान कर, नई श्रेष्ठ पीढ़ी को तैयार किया जा सके। इसी से हमारे देश और समाज में भ्रष्टाचार, अनाचार, अत्याचार और अन्य जो हो रहे घिनौने अपराध हैं, उन सबका समय के साथ–साथ अपने आप निवारण होता चला जायेगा।

**चौथा मूल मन्त्र**

**<u>अश्लील और निम्न स्तर का साहित्य, टी.वी. चैनल के प्रदर्शन, फिल्म शो, मैगज़ीन (पत्रिकाएं),पोस्टर, अखबार आदि प्रिंट एवं इलैक्ट्रोनिक मीडिया पर कानून द्वारा पाबन्दी हो।</u>**

इन सबके बारे में इतना कहना ही मैं काफी समझता हूँ कि आज हमें अपने बच्चों और परिवार के सब सम्बन्धियों के साथ इक्ट्ठे मिल कर उपरोक्त तरह के socalled ज्ञान, सूचना और entertainment के साधनों को सुनने देखने और पढ़ने में शर्म महसूस होती है, ऐसा क्यों यह आप सब जानते हैं और समझते हैं। इन उपरोक्त विषयों पर और अधिक लिखते हुये मुझे स्वयं शर्म आ रही हैं। इसके बारे में इतना ही लिखना काफी है कि सरकार और मीडिया के सब लोग एक ऐसी

सहमति और मकैनिज़म तैयार करें, जिससे हम इन सब साधनों का, बच्चों, युवकों, समाज और देश की भलाई तथा सुख–शान्ति के लिए प्रयोग में लाया जा सके। आज हम अपने चारों तरफ देख रहे हैं कि ये सब उपरोक्त साधन बिना किसी रोक टोक के अपना–अपना प्रदर्शन पैसा कमाने की होड़ में किये जा रहे हैं। सरकार और राजनेताओं को जितना जल्दी हो सके, इन सब पहलुओं को ध्यान में रखकर, सख्त कानून बनाना चाहिए ।

**पांचवां मूल मन्त्र**

**सरकारी चरित्र निर्माण विभागः–** मैंने पिछले 2 वर्षों से कई हरियाणा राज्य की बड़ी जेलों, बच्चों की जेलों जैसे observation home, Borstle Jail, Ladies Wards, अनाथालय (Orphanage) और कई सरकारी, रैडक्रास और गैर सरकारी अनाथ छात्र–छात्राओं के लिए चलाई जा रही संस्थाओं का निरीक्षण किया। इस प्रकार और भी कई सरकारी एवम् N.G.O. द्वारा चलाये जा रहे नशामुक्ति केन्द्रो में भी जाने का मौका मिला। इन सब उपरोक्त स्थानों पर रह रहे शिशुओं, लोगों और बन्दियों Inmates से विस्तृत बातचीत (Interaction) भी की, आखिर में इस नतीजे पर पहुंचा कि अधिकतर बन्दी एवं उन बच्चों, नवयुवकों और लोगों को, वहाँ भेजने में हमारे परिवार, समाज और सरकार ही जिम्मेवार है। क्योंकि हम सब उनको (Inmates) को सही वातावरण मौलिक शिक्षा और चरित्र निर्माण के संस्कार देने में असफल रहे हैं।

बड़े गहन विचार और सोचने के बाद मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकारें समाज में फैल रही चरित्रहीनता, अराजकता और भ्रष्टाचार की उक्त समस्या को हल करने के लिये war footing पर उचित समय रहते कदम उठाएं । इसके लिए मेरा एक सबसे बड़ा सुझाव यह है कि दूसरे ऊपरलिखित चार मूल मन्त्रों के साथ सरकारी तौर पर एक ऐसा विभाग Department create किया जाये, जो समाज, जनता और दूर दराज के क्षेत्रों में जाकर Public Relation का काम करते हुये, लोगों के चरित्र (Character building) और नैतिक मूल्यों (Moral Ethics) और संस्कार बनाने के साथ देश के अच्छे नागरिक (good human being) बनाने की जिम्मेवारी लें। यह सब करने के लिए

इस क्षेत्र में Eminent और Expert Educationists का राज्य स्तर पर Board constitute किया जाये जो सरकारी महकमें को इस विषय पर पहले पूरी रूप रेखा तैयार करके उसे पूरी तरह से लागू करवाये।

मैं यह मानता हूँ कि जो इस अध्याय में भ्रष्टाचार, कदाचार, अनाचार, अत्याचार, दुराचार और अपराध की मोटे तौर पर रूप रेखा और उनके घटित होने के कारण जानकर उन सबको दिये गये उपचारों से निवारण करने के लिए कुछ लम्बा समय लग सकता है लेकिन मैं यह पूर्ण निश्चय और विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि यदि सरकार मेरे द्वारा दिए जाने वाले उपरोक्त सुझावों के साथ प्रोग्राम को पूर्ण इच्छा शक्ति से लागू कर पाई तो इन सब समस्याओं का जड़ से उन्मूलन हो जायेगा और इस प्रकार हम अपनी खोई हुई गौरवशाली और वैभवशाली विरासत को फिर से प्राप्त कर पायेंगे जिससे सब देशवासियों का जीवन शान्तिमय एवं सुखमय हो जाएगा और यह देश और उसके नागरिक पुनः सदाचारी एवं आदर्शमय बन सकेंगे।

**दिनांक 22 मई, 2013**

**(जस्टिस प्रीतम पाल)**
**(पूर्व जज पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट)**
**लोकायुक्त, हरियाणा।**